तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मंगलाचरण

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

सम्यग्ज्ञान व मिथ्याज्ञान की तुलना

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥

अर्थ – [यदृच्छोपलब्धेः] अपनी इच्छा से चाहे जैसा (Whims) ग्रहण करने के कारण [सत् असतोः] विद्यमान और अविद्यमान पदार्थों का [अविशेषात्] भेदरूप ज्ञान (यथार्थ विवेक) न होने से [उन्मत्तवत्] पागल के ज्ञान की भाँति मिथ्यादृष्टि का ज्ञान विपरीत अर्थात् मिथ्याज्ञान ही होता है।

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - सूत्र का अर्थ

सत् = विद्यमान (वस्तु) असत् = अविद्यमान (वस्तु)

अविशेषात् = इन दोनों का यथार्थ विवेक न होने से।

यदृच्छ (विपर्यय) उपलब्धेः = [विपर्यय शब्द की ३१वें सूत्र से अनुवृत्ति चली आई है।] विपरीत–अपनी मनमानी इच्छानुसार कल्पनाएँ होने से वह मिथ्याज्ञान है।

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - सूत्र का अर्थ

उन्मत्तवत् - मदिरा पीए हुए मनुष्य की भाँति।

विपर्यय - विपरीतता

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - विपर्यय का स्वरूप

विपर्यय – विपरीतता, वह तीन प्रकार की है – १. कारणविपरीतता, २. स्वरूप–विपरीतता, ३. भेदाभेदविपरीतता।

कारणविपरीतता – मूलकारण को न पहचाने और अन्यथा कारण को माने।

अध्याय १: सूत्र ३२ - सम्यग्ज्ञान व मिथ्याज्ञान की तुलना

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - विपर्यय का स्वरूप

स्वरूपविपरीतता – जिसे जानता है, उसके मूल वस्तुभूत स्वरूप को न पहचाने और अन्यथा स्वरूप को जाने।

भेदाभेदविपरीतता – जिसे वह जानता है, उसे 'यह इससे भिन्न है' और 'यह इससे अभिन्न है' – इस प्रकार यथार्थ न पहचानकर अन्यथा भिन्नत्व–अभिन्नत्व को माने, सो भेदाभेदविपरीतता है।

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - विपर्यय के प्रकार

विपर्यय – भी दो प्रकार का है, सहज और आहार्य।

(१) **सहज** – जो स्वत: अपनी भूल से अर्थात् परोपदेश के बिना विपरीतता उत्पन्न होती है।

(२) **आहार्य** – दूसरे के उपदेश से ग्रहण की गई विपरीतता। यह श्रोत्रेन्द्रिय के द्वारा होनेवाले कुमतिज्ञानपूर्वक ग्रहण किया गया कुश्रुतज्ञान है।

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - संशय के कुछ प्रकार

१-कुछ लोगों को यह संशय होता है कि धर्म या अधर्म कुछ होगा या नहीं ?

२- कुछ लोगों को सर्वज्ञ के अस्तित्व-नास्तित्व का संशय होता है।

३- कुछ लोगों को परलोक के अस्तित्व-नास्तित्व का संशय होता है।

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - अनध्यवसाय के कुछ प्रकार

४- कुछ लोगों को अनध्यवसाय (अनिर्णय) होता है। वे कहते हैं कि हेतुवादरूप तर्कशास्त्र है, इसलिए उससे कुछ निर्णय नहीं हो सकता और जो आगम है, सो वे भिन्न-भिन्न प्रकार से वस्तु का स्वरूप बतलाते हैं, कोई कुछ कहता है और कोई कुछ, इसलिए उनकी परस्पर बात नहीं मिलती।

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - अनध्यवसाय के कुछ प्रकार

५- कुछ लोगों को ऐसा अनध्यवसाय होता है कि कोई ज्ञाता सर्वज्ञ अथवा कोई मुनि या ज्ञानी प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देता कि जिसके वचनों को हम प्रमाण मान सकें और धर्म का स्वरूप अति सूक्ष्म है, इसलिए कैसे निर्णय हो सकता है? इसलिए 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' अर्थात् बड़े आदमी जिस मार्ग से जाते हैं, उसी मार्ग पर हमें चलना चाहिए।

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - विपर्यय के कुछ प्रकार

६- कुछ लोग वीतराग धर्म का लौकिक वादों के साथ समन्वय करते हैं। वे शुभभावों के वर्णन में कुछ समानता देखकर जगत में चलनेवाली सभी धार्मिक मान्यताओं को एक मान बैठते हैं। (यह विपर्यय है।)

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - विपर्यय के कुछ प्रकार

७- कुछ लोग यह मानते हैं कि मन्दकषाय से धर्म (शुद्धता) होता है, (यह भी विपर्यय है।)

८- कुछ लोग ईश्वर के स्वरूप को इस प्रकार विपर्यय मानते हैं कि इस जगत को किसी ईश्वर ने उत्पन्न किया है और वह उसका नियामक है।

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥ ३२ ॥ - सूत्र का सार

इस प्रकार संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय अनेक प्रकार से मिथ्याज्ञान में होते हैं; इसलिए सत् और असत् का यथार्थ भेद समझकर, स्वच्छन्दतापूर्वक की जानेवाली कल्पनाओं और उन्मत्तता को दूर करने के लिए यह सूत्र कहते हैं। [मिथ्यात्व को उन्मत्तता कहा है, क्योंकि मिथ्यात्व से अनन्त पापों का बन्ध होता है, जिसका ध्यान जगत को नहीं है।] ॥३२ ॥

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ३१-३२

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय, केवलज्ञान का विषय	२६-२९	४
एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं?	३०	१
मति, श्रुत और अवधिज्ञान में मिथ्यात्व एवं उत्तर	३१, ३२	२
प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं	३३	१

प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥

अर्थ - [नैगम] नैगम [संग्रह] संग्रह [व्यवहार] व्यवहार [ऋजुसूत्र] ऋजुसूत्र [शब्द] शब्द [समभिरूढ] समभिरूढ़ [एवंभूता] एवंभूत - यह सात [नयाः] नय [Viewpoints] हैं।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - वस्तु का स्वरूप

- प्रत्येक वस्तु में अनेक धर्म रहे हुए हैं, इसलिए वह अनेकान्तस्वरूप है।
- ['अन्त' का अर्थ 'धर्म' होता है] अनेकान्तस्वरूप समझाने की पद्धति को 'स्याद्वाद' कहते हैं।
- स्याद्वाद द्योतक है, अनेकान्त द्योत्य है।
- 'स्यात्' का अर्थ 'कथञ्चित्' होता है, अर्थात् किसी यथार्थ प्रकार की विवक्षा का कथन स्याद्वाद है। अनेकान्त का प्रकाश करने के लिए 'स्यात्' शब्द का प्रयोग किया आता है।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - नय का स्वरूप

- वस्तु के अनेक धर्मों में से किसी एक की मुख्यता करके अन्य धर्मों का विरोध किए बिना उन्हें गौण करके साध्य को जानना, सो नय है।
- हेतु और विषय की सामर्थ्य की अपेक्षा से प्रमाण से निरूपण किए गए अर्थ के एक देश को कहना, सो नय है।
- उसे 'सम्यक्-एकान्त' भी कहते हैं।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - श्रुत का स्वरूप

- श्रुतप्रमाण दो प्रकार का है स्वार्थ और परार्थ।
- उस श्रुतप्रमाण का अंश नय है।
- शास्त्र का भाव समझने के लिए नयों का स्वरूप समझना आवश्यक है,
- सात नयों का स्वरूप निम्नप्रकार है—

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - नैगमनय का स्वरूप

- जो भूतकाल की पर्याय में वर्तमानवत् सङ्कल्प करे अथवा
- भविष्य की पर्याय में वर्तमानवत् सङ्कल्प करे तथा
- वर्तमान पर्याय में कुछ निष्पन्न (प्रगटरूप) है और कुछ निष्पन्न नहीं है, उसका निष्पन्नरूप सङ्कल्प करे,
- उस ज्ञान को तथा वचन को नैगमनय कहते हैं। [Figurative]

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - संग्रहनय का स्वरूप

- जो समस्त वस्तुओं को तथा समस्त पर्यायों को संग्रहरूप करके जानता है तथा कहता है, सो संग्रहनय है।
- जैसे सत् द्रव्य, इत्यादि [General, Common]

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - व्यवहारनय का स्वरूप

- अनेक प्रकार के भेद करके व्यवहार करे या भेदे, सो व्यवहारनय है।
- जो संग्रहनय के द्वारा ग्रहण किए हुए पदार्थ को विधिपूर्वक भेद करे, सो व्यवहार है।
- जैसे सत् के दो प्रकार हैं - द्रव्य और गुण।
- द्रव्य के छह भेद हैं - जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।
- गुण के दो भेद हैं - सामान्य और विशेष।
- इस प्रकार जहाँ तक भेद हो सकते हैं, वहाँ तक यह नय प्रवृत्त होता है।
- [Distributive]

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - ऋजुसूत्रनय का स्वरूप

- [ऋजु अर्थात् वर्तमान, उपस्थित, सरल] जो ज्ञान का अंश वर्तमान पर्याय मात्र को ग्रहण करे, सो ऋजुसूत्रनय है।
- [Present condition]

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - शब्दनय का स्वरूप

- जो नय लिङ्ग, संख्या, कारक आदि के व्यभिचार को दूर करता है, सो शब्दनय है।
- यह नय लिङ्गादि के भेद से पदार्थ को भेदरूप ग्रहण करता है;
- जैसे दार (पु०) भार्या (स्त्री) कलत्र (न०), यह दार, भार्या और कलत्र तीनों शब्द भिन्न लिङ्गवाले होने से यद्यपि एक ही पदार्थ के वाचक हैं, तथापि यह नय स्त्री पदार्थ को लिङ्ग के भेद से तीन भेदरूप जानता है। [Descriptive]

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - समभिरूढ़नय का स्वरूप

- जो भिन्न-भिन्न अर्थों का उल्लंघन करके एक अर्थ को रूढ़ि से ग्रहण करे। जैसे गाय [Usage]
- जो पर्याय के भेद से अर्थ को भेदरूप ग्रहण करे। जैसे इन्द्र, शक्र, पुरन्दर; यह तीनों शब्द इन्द्र के नाम हैं, किन्तु यह नय तीनों का भिन्न-भिन्न अर्थ करता है। [Specific]

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - एवंभूतनय का स्वरूप

- जिस शब्द का जिस क्रियारूप अर्थ है, उस क्रियारूप परिणमित होनेवाले पदार्थ को जो नय ग्रहण करता है, उसे एवंभूतनय कहते हैं।
- जैसे पुजारी को पूजा करते समय ही पुजारी कहना। [Active]

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - द्रव्य का स्वरूप

- द्रव्य नाम वस्तुओं का भी है और वस्तुओं के सामान्यस्वभावमय एक स्वभाव का भी है।
- जब द्रव्य प्रमाण का विषय होता है, तब उसका अर्थ वस्तु (द्रव्य-गुण और तीनों काल की पर्याय सहित) करना चाहिए।
- जब नयों के प्रकरण में द्रव्यार्थिक का प्रयोग होता है तब 'सामान्यस्वभावमय एक स्वभाव' (सामान्यात्मक धर्म) अर्थ करना चाहिए।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - पर्याय का स्वरूप

- पर्याय के दो भेद हैं—(१) सहभावी - जिसे गुण कहते हैं, (२) क्रमभावी - जिसे पर्याय कहते हैं।
- जब नयों के प्रकरण में पर्यायार्थिक का प्रयोग होता है तब 'विशेषस्वभावमय एक स्वभाव' (विशेषात्मक धर्म) अर्थ करना चाहिए।

अध्याय १: सूत्र ३३ - प्रमाण का स्वरुप कहा गया, अब श्रुतज्ञान के अंशरुप नय का स्वरुप कहते हैं

नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरुढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥ - वर्गीकरण

- वर्गीकरण
  - द्रव्यार्थिक नय
    - सामान्य, उत्सर्ग, अनुवृत्ति
      - नैगमनय, संग्रहनय, व्यवहारनय
  - पर्यायार्थिक नय
    - विशेष, अपवाद, व्यावृत्ति
      - ऋजुसूत्रनय, शब्दनय, समभिरूढ़नय, एवंभूतनय

जिनवाणी स्तुति